राष्ट्रवाद

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» राष्ट्रवाद का परिचय और उसका दोहरा प्रभाव

प्रश्न 1 (आसान). आप राष्ट्रवाद शब्द से क्या समझते हैं?
उत्तर – राष्ट्रवाद एक ऐसी भावना है जो लोगों को अपनी साझा पहचान, संस्कृति, भाषा या इतिहास के आधार पर अपने देश के प्रति एकजुटता और वफादारी महसूस कराती है।

प्रश्न 2 (आसान). गणतंत्र दिवस की परेड राष्ट्रवाद का कैसा प्रतीक है?
उत्तर – यह सत्ता, शक्ति और भारत की विविधता में एकता की भावना को दर्शाता है, जहाँ अलग-अलग राज्यों और संस्कृतियों के लोग एक राष्ट्रीय पहचान के तहत एकजुट होते हैं।

प्रश्न 3 (मध्यम). राष्ट्रवाद ने पिछली दो शताब्दियों में इतिहास रचने में कैसे योगदान दिया है?
उत्तर – राष्ट्रवाद ने साम्राज्यों को ध्वस्त किया, नए राष्ट्र-राज्यों का निर्माण किया, और लोगों को अत्याचारी शासन से मुक्ति दिलाने में मदद की, लेकिन साथ ही युद्धों और विभाजनों का कारण भी बना।

प्रश्न 4 (कठिन). आपकी राय में राष्ट्रवाद लोगों को जोड़ने से ज्यादा विभाजित क्यों करता है? कोई एक उदाहरण दीजिए।
उत्तर – राष्ट्रवाद तब विभाजनकारी हो जाता है जब लोग अपनी राष्ट्रीय पहचान को दूसरों से श्रेष्ठ मानने लगते हैं या जब किसी राष्ट्र के भीतर ही कुछ समूह अपनी अलग पहचान के आधार पर अलग राज्य की मांग करते हैं। जैसे, श्रीलंका में तमिलों द्वारा अलग राष्ट्र की मांग ने वहाँ लंबे समय तक संघर्ष को जन्म दिया।

» राष्ट्र और अन्य सामाजिक समूहों में अंतर

प्रश्न 5 (आसान). क्या एक परिवार के सभी सदस्य एक-दूसरे को सीधे जानते हैं?
उत्तर – हाँ, एक परिवार के सभी सदस्य एक-दूसरे को सीधे जानते हैं।

प्रश्न 6 (आसान). क्या राष्ट्र के सभी सदस्यों को व्यक्तिगत रूप से जानना संभव है?
उत्तर – नहीं, राष्ट्र के सभी सदस्यों को व्यक्तिगत रूप से जानना संभव नहीं है।

प्रश्न 7 (मध्यम). आप राष्ट्र को एक 'काल्पनिक समुदाय' क्यों कह सकते हैं?
उत्तर – राष्ट्र को 'काल्पनिक समुदाय' कहते हैं क्योंकि इसके सदस्य एक-दूसरे को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानते, लेकिन एक साझा विश्वास, आकांक्षाओं और कल्पनाओं के सहारे एकजुट महसूस करते हैं।

प्रश्न 8 (कठिन). जनजातीय समूहों और राष्ट्र के बीच मुख्य भावनात्मक अंतर क्या है?
उत्तर – जनजातीय समूहों में भावनात्मक जुड़ाव वंश परंपरा या विवाह जैसे प्रत्यक्ष और सीमित सामाजिक संबंधों पर आधारित होता है। राष्ट्र में भावनात्मक जुड़ाव एक व्यापक 'साझा सामूहिक पहचान' और विश्वास पर आधारित होता है, जो व्यक्तिगत संबंधों से परे होता है।

» राष्ट्र निर्माण के आधारभूत तत्व: सामूहिक विश्वास

प्रश्न 9 (आसान). 'राष्ट्र' को 'काल्पनिक समुदाय' क्यों कहा जाता है?
उत्तर – क्योंकि राष्ट्र के सदस्य एक-दूसरे को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानते, लेकिन साझा विश्वासों और आकांक्षाओं से एक-दूसरे से जुड़े होते हैं।

प्रश्न 10 (आसान). सामूहिक विश्वास के दो उदाहरण दें जो राष्ट्र निर्माण में सहायक हैं।
उत्तर – साझा इतिहास में विश्वास और एक साझा भविष्य की कल्पना।

प्रश्न 11 (मध्यम). क्या राष्ट्र एक पहाड़ या नदी की तरह भौतिक चीज़ है? समझाइए।
उत्तर – नहीं, राष्ट्र एक भौतिक चीज़ नहीं है जिसे देखा या छुआ जा सके। यह लोगों के सामूहिक विश्वास, भावनाओं और पहचान पर आधारित एक अमूर्त अवधारणा है।

प्रश्न 12 (कठिन). 'सामूहिक विश्वास' कैसे राष्ट्र के सदस्यों को 'स्वतंत्र राजनीतिक अस्तित्व' के लिए प्रेरित करता है?
उत्तर – सामूहिक विश्वास लोगों में एक साझा पहचान और भविष्य की आकांक्षा पैदा करता है। जब सब मिलकर मानते हैं कि उनका एक साझा भविष्य है, तो वे एक स्वतंत्र राजनीतिक इकाई बनाने और उसे बनाए रखने के लिए एकजुट होते हैं, ताकि वे अपने सामूहिक लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें।

» राष्ट्र निर्माण के आधारभूत तत्व: साझा इतिहास, भूक्षेत्र और राजनीतिक आदर्श

प्रश्न 13 (आसान). राष्ट्र निर्माण के कोई दो आधारभूत तत्व बताइए।
उत्तर – साझा इतिहास और भूक्षेत्र।

प्रश्न 14 (आसान). जवाहरलाल नेहरू की किस किताब में भारत की 'एकता की छाप' का ज़िक्र है?
उत्तर – डिस्कवरी ऑफ इंडिया (Discovery of India)।

प्रश्न 15 (मध्यम). राष्ट्र के लोग अपनी गृहभूमि को किन-किन नामों से पुकारते हैं? किन्हीं दो का उल्लेख करें।
उत्तर – मातृभूमि (Motherland), पितृभूमि (Fatherland), या पवित्र भूमि (Holy land)।

प्रश्न 16 (कठिन). साझे राजनीतिक आदर्शों का क्या महत्व है? समझाइए कि ये कैसे राष्ट्र को अन्य समूहों से अलग करते हैं।
उत्तर – साझे राजनीतिक आदर्श एक राष्ट्र को भविष्य के बारे में एक 'साझा नज़रिया' और 'स्वतंत्र राजनीतिक अस्तित्व' बनाने की 'सामूहिक चाहत' देते हैं। ये आदर्श (जैसे लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता) लोगों को एक 'राजनीतिक पहचान' देते हैं और उन्हें उन मूल्यों पर एक साथ रहने के लिए प्रतिबद्ध करते हैं, जो अन्य साधारण सामाजिक समूहों में नहीं होते।

» सांस्कृतिक पहचान बनाम राजनीतिक पहचान

प्रश्न 17 (आसान). अगर एक राष्ट्र सिर्फ़ एक ही भाषा के आधार पर बनता है, तो वह किस प्रकार की पहचान है?
उत्तर – सांस्कृतिक पहचान

प्रश्न 18 (आसान). भारत को एक 'विविध' देश क्यों कहा जाता है?
उत्तर – क्योंकि यहाँ कई भाषाएँ, धर्म और संस्कृतियाँ हैं।

प्रश्न 19 (मध्यम). एक राष्ट्र में राजनीतिक पहचान क्यों महत्वपूर्ण है?
उत्तर – क्योंकि यह 'लोकतांत्रिक मूल्यों' और 'सभी नागरिकों की समानता' को सुनिश्चित करती है, भले ही उनकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अलग हो।

प्रश्न 20 (कठिन). अगर किसी देश में एक धार्मिक समूह दूसरे पर अपनी पहचान थोपने लगे तो क्या परिणाम हो सकते हैं? यह 'सांस्कृतिक' या 'राजनीतिक' पहचान से कैसे जुड़ा है?
उत्तर – इससे देश में 'अशांति, भेदभाव और विभाजन' हो सकता है। यह 'सांस्कृतिक पहचान' को राजनीतिक पहचान पर हावी करने का प्रयास है, जो लोकतांत्रिक सिद्धांतों के खिलाफ है।

» राष्ट्रीय आत्म-निर्णय का अधिकार

प्रश्न 21 (आसान). राष्ट्रीय आत्म-निर्णय का अर्थ क्या है?
उत्तर – राष्ट्रों का अपना शासन स्वयं करने और अपना भविष्य खुद तय करने का अधिकार।

प्रश्न 22 (आसान). बास्क लोग किस देश से अलग होने की मांग कर रहे हैं?
उत्तर – स्पेन।

प्रश्न 23 (मध्यम). राष्ट्रीय आत्म-निर्णय का अधिकार राज्यों के निर्माण को कैसे प्रभावित करता है?
उत्तर – यह नए राज्यों के गठन या मौजूदा राज्यों के भीतर स्वायत्त क्षेत्रों के निर्माण का आधार बन सकता है, जिससे राज्यों की सीमाओं में बदलाव हो सकता है।

प्रश्न 24 (कठिन). क्या प्रत्येक सांस्कृतिक समूह को अलग राज्य का अधिकार मिलना चाहिए? अपने उत्तर के समर्थन में तर्क दें।
उत्तर – नहीं, प्रत्येक सांस्कृतिक समूह को अलग राज्य देना अव्यावहारिक और अवांछनीय हो सकता है। इससे बहुत छोटे, अस्थिर राज्य बन सकते हैं और अल्पसंख्यक समुदायों की समस्याएँ बढ़ सकती हैं। बेहतर समाधान मौजूदा राज्यों को अधिक लोकतांत्रिक और समावेशी बनाना है।

» आत्म-निर्णय के दावों के निहितार्थ और चुनौतियाँ

प्रश्न 25 (आसान). अगर 'एक संस्कृति - एक राज्य' का विचार लागू किया जाए तो सबसे बड़ा 'खतरा' क्या है?
उत्तर – 'जनसंख्या विस्थापन' और 'हिंसा' का खतरा।

प्रश्न 26 (आसान). बास्क आंदोलन किस देश में 'आत्म-निर्णय' की माँग का एक उदाहरण है?
उत्तर – स्पेन।

प्रश्न 27 (मध्यम). 'आत्म-निर्णय' के दावों से 'अल्पसंख्यक समुदायों' को किन 'समस्याओं' का सामना करना पड़ सकता है?
उत्तर – उन्हें अपने 'नए राज्य' में 'असुरक्षा' महसूस हो सकती है, उनकी 'भाषा और संस्कृति' को 'नकारा' जा सकता है, और उनके 'अधिकार' छीन लिए जा सकते हैं।

प्रश्न 28 (कठिन). आपकी राय में, 'आत्म-निर्णय' की माँगों से निपटने का सबसे अच्छा तरीका क्या होना चाहिए - क्या हमेशा 'अलग राज्य' बनाना सही है या कुछ और विकल्प भी हैं?
उत्तर – हमेशा 'अलग राज्य' बनाना सही नहीं है। बेहतर तरीका यह है कि 'मौजूदा राज्यों' को 'अधिक लोकतांत्रिक' और 'समावेशी' बनाया जाए, जहाँ 'सभी सांस्कृतिक पहचानों' को 'सम्मान' मिले और 'अल्पसंख्यकों के अधिकारों' की रक्षा हो।

» राष्ट्रवाद और बहुलवाद: समावेशी पहचान की आवश्यकता

प्रश्न 29 (आसान). बहुलवाद का एक सरल अर्थ बताइए।
उत्तर – एक ही देश में कई संस्कृतियों और समुदायों का एक साथ शांति से रहना।

प्रश्न 30 (आसान). भारत का संविधान अल्पसंख्यकों के किन अधिकारों की रक्षा करता है?
उत्तर – भाषा, संस्कृति और धर्म के अधिकार।

प्रश्न 31 (मध्यम). समावेशी राष्ट्रीय पहचान का क्या मतलब है?
उत्तर – इसका मतलब है कि राष्ट्रीय पहचान ऐसी हो जो देश के सभी सदस्यों के महत्व और अद्वितीय योगदान को स्वीकार और सम्मान दे।

प्रश्न 32 (कठिन). राष्ट्रवाद और बहुलवाद एक साथ कैसे चल सकते हैं? समझाओ।
उत्तर – राष्ट्रवाद सभी नागरिकों को एक राष्ट्रीय पहचान से जोड़ता है, जबकि बहुलवाद इस बात पर जोर देता है कि इस राष्ट्रीय पहचान के भीतर विभिन्न सांस्कृतिक, धार्मिक और भाषाई समूहों की विशिष्ट पहचान को भी स्वीकार और संरक्षित किया जाए, जिससे एक मजबूत और समावेशी राष्ट्र बनता है।

» रवींद्रनाथ टैगोर की राष्ट्रवाद पर समालोचना

प्रश्न 33 (आसान). टैगोर के लिए राष्ट्रवाद से ऊपर क्या था?
उत्तर – मानवता

प्रश्न 34 (आसान). टैगोर किस प्रकार के राष्ट्रवाद के आलोचक थे?
उत्तर – संकीर्ण राष्ट्रवाद

प्रश्न 35 (मध्यम). टैगोर पश्चिमी सभ्यता के बारे में क्या सोचते थे - क्या वे उसका पूरी तरह विरोध करते थे?
उत्तर – नहीं, वे पश्चिमी साम्राज्यवाद के विरोधी थे, लेकिन पश्चिमी सभ्यता से सीखने और लाभ उठाने को गलत नहीं मानते थे।

प्रश्न 36 (कठिन). टैगोर की यह चिंता क्यों थी कि पश्चिमी विचारों को खारिज करने से देश के भीतर क्या समस्या आ सकती है?
उत्तर – उन्हें डर था कि पश्चिमी विचारों को खारिज करने की सोच, देश के भीतर मौजूद ईसाई, यहूदी, पारसी और इस्लाम जैसे 'विदेशी प्रभावों' के खिलाफ आक्रामकता में बदल सकती है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. राष्ट्रवाद के दोहरे प्रभाव को स्पष्ट कीजिए।

› पहला प्रभाव: राष्ट्रवाद कैसे लोगों को जोड़ता है और राष्ट्र निर्माण में मदद करता है, इसे समझाइए।
› उदाहरण: स्वतंत्रता संग्राम में भारतीयों का एक होना।
› दूसरा प्रभाव: राष्ट्रवाद कैसे लोगों को विभाजित करता है या युद्ध का कारण बनता है, इसे समझाइए।
› उदाहरण: विभिन्न साम्राज्यों का विघटन या अलगाववादी संघर्ष।

उत्तर – राष्ट्रवाद का दोहरा प्रभाव यह है कि यह जहाँ एक ओर लोगों को एक साझा पहचान और उद्देश्य के लिए एकजुट करता है, वहीं दूसरी ओर यह विभिन्न समूहों के बीच मतभेद, विरोध और यहाँ तक कि युद्ध का कारण भी बन सकता है, जिससे राष्ट्रों का विभाजन या विघटन हो सकता है।

उदाहरण 2. एक राष्ट्र और एक बड़े परिवार में दो प्रमुख अंतर बताइए।

› पहला अंतर: परिवार में सदस्य 'प्रत्यक्ष संबंधों' और व्यक्तिगत पहचान पर आधारित होते हैं। आप अपने मम्मी-पापा, भाई-बहन, दादा-दादी को व्यक्तिगत रूप से जानते हैं और उनसे सीधा रिश्ता होता है।

› दूसरा अंतर: राष्ट्र में, उसके 'अधिकांश सदस्यों' को आप व्यक्तिगत रूप से नहीं जानते, न ही उनसे कोई सीधा वंशानुगत संबंध होता है। लोग एक 'साझा विश्वास और सामूहिक पहचान' के आधार पर जुड़े होते हैं कि वे सब एक राष्ट्र के नागरिक हैं।

उत्तर – एक राष्ट्र और एक बड़े परिवार में मुख्य अंतर प्रत्यक्ष संबंध और सदस्यों की व्यक्तिगत पहचान का होता है। परिवार में सभी सदस्य एक-दूसरे को जानते हैं, जबकि राष्ट्र में अधिकांश सदस्य एक-दूसरे से अपरिचित होते हैं, फिर भी एक साझा विश्वास और पहचान से जुड़े होते हैं।

उदाहरण 3. राष्ट्र निर्माण में 'सामूहिक विश्वास' की भूमिका समझाइए।

› पहला कदम: यह समझना कि राष्ट्र 'भौतिक' नहीं, बल्कि 'मानसिक' जुड़ाव पर आधारित है।

› दूसरा कदम: 'सामूहिक विश्वास' का अर्थ बताना - जैसे एक साझा पहचान, एक साझा इतिहास की भावना, और एक साझा भविष्य की उम्मीद।

› तीसरा कदम: उदाहरण देकर समझाना कि कैसे लोग बिना व्यक्तिगत पहचान के भी एक-दूसरे से जुड़ाव महसूस करते हैं (जैसे गणतंत्र दिवस परेड)।

› चौथा कदम: यह बताना कि यही विश्वास लोगों को एक समूह के रूप में कार्य करने और राष्ट्र के लिए त्याग करने के लिए प्रेरित करता है।

उत्तर – राष्ट्र निर्माण में 'सामूहिक विश्वास' वह अदृश्य शक्ति है जो लाखों-करोड़ों लोगों को एक साथ बांधे रखती है, भले ही वे व्यक्तिगत रूप से एक-दूसरे को न जानते हों। यह लोगों की साझा पहचान, एक समान इतिहास की भावना, और भविष्य के लिए एक जैसी आकांक्षाओं पर आधारित होता है। इसी विश्वास के कारण लोग अपने राष्ट्र को एक 'टीम' मानते हुए

उसके लिए समर्पित रहते हैं।

उदाहरण 4. राष्ट्र निर्माण में साझा इतिहास, भूक्षेत्र और राजनीतिक आदर्श कैसे सहायक होते हैं, उदाहरण सहित समझाइए।

› सबसे पहले, 'साझा इतिहास' को देखते हैं। यह क्या है? 'Permanent historical identity' - मतलब राष्ट्र के लोग अपने बारे में एक 'स्थायी ऐतिहासिक पहचान' महसूस करते हैं। यह बीता हुआ कल और आने वाला कल दोनों को समेटे होता है। 'Common memories, legends, and historical records' - यानी हमारी साझी यादें, कहानियाँ, और पुराने रिकॉर्ड, ये सब मिलकर हमारे अंदर 'history consciousness' यानी इतिहास-बोध पैदा करते हैं। जैसे, हमारे भारत में जवाहरलाल नेहरू ने अपनी किताब 'Discovery of India' में लिखा है कि, 'Diversity and innumerable variations externally, but everywhere a tremendous impress of unity' - यानी बाहर से भले ही हम अलग-अलग दिखते हैं, लेकिन एक 'एकता की छाप' हमेशा हमें जोड़े रखती है।

› दूसरा आधार है 'भूक्षेत्र'। कई राष्ट्रों की पहचान एक खास 'geographical area' से जुड़ी होती है। 'Living together on a particular territory for a long time' - एक ही जगह पर लंबे समय तक साथ-साथ रहना और उस जगह से जुड़ी साझी यादें हमें 'collective identity' यानी एक सामूहिक पहचान देती हैं। इसीलिए तो लोग अपनी 'homeland' यानी गृहभूमि की बात करते हैं और उसे 'Motherland' या 'Fatherland' या 'Holy land' कहते हैं। जैसे, यहूदी लोग दुनिया भर में फैले होने के बावजूद 'Palestine' को अपनी 'Holy land' मानते हैं। हम भारतीय, भारतीय उपमहाद्वीप की नदियों, पहाड़ों और मैदानों से अपनी पहचान जोड़ते हैं।

› और तीसरा, 'साझे राजनीतिक आदर्श'। 'Shared outlook about the future and a collective desire to establish independent political existence' - भविष्य के बारे में हमारा साझा नज़रिया और अपना 'स्वतंत्र राजनीतिक अस्तित्व' बनाने की सामूहिक चाहत, यही राष्ट्र को बाकी समूहों से अलग करती है। 'Common vision about the kind of state they want to build' - हम कैसा राज्य बनाना चाहते हैं, इस पर हमारी एक साझा सोच होती है। जैसे 'democracy, secularism, and liberalism' - लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और उदारवाद जैसे मूल्य और सिद्धांत। 'Shared commitment to certain political values and ideals' - इन्हीं मूल्यों और आदर्शों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता ही हमें एक 'राजनीतिक समुदाय' या राष्ट्र के रूप में बांधती है। 'Loyalty to the nation' - राष्ट्र के प्रति वफादारी भी इन्हीं 'mutual responsibilities' यानी आपसी जिम्मेदारियों को निभाने से पैदा होती है।

› संक्षेप में, ये तीनों तत्व - साझा इतिहास जो हमें अतीत से जोड़ता है, भूक्षेत्र जो हमें एक जगह देता है, और राजनीतिक आदर्श जो हमें भविष्य के लिए एक करते हैं - मिलकर एक मज़बूत राष्ट्र का निर्माण करते हैं।

उत्तर – राष्ट्र निर्माण में साझा इतिहास, भूक्षेत्र और साझे राजनीतिक आदर्श लोगों को एक 'स्थायी पहचान', एक 'भौगोलिक जुड़ाव' और एक 'सामूहिक भविष्य' की दृष्टि देकर एकजुट करते हैं, जिससे एक मजबूत राष्ट्र का निर्माण होता है।

उदाहरण 5. मान लीजिए एक काल्पनिक देश 'शान्तिपुरी' में तीन अलग-अलग भाषा बोलने वाले और दो अलग-अलग धर्म मानने वाले लोग रहते हैं। अगर शान्तिपुरी की सरकार अपनी राष्ट्रीय पहचान 'एक विशेष भाषा और धर्म' पर आधारित कर दे, तो क्या चुनौतियां आएंगी?

› पहला कदम: पहचानना कि 'शान्तिपुरी' में 'सांस्कृतिक विविधता' बहुत है - तीन भाषाएं, दो धर्म।

› दूसरा कदम: अगर सरकार एक 'विशेष भाषा और धर्म' को राष्ट्रीय पहचान बनाएगी, तो बाकी भाषाओं और धर्मों के लोगों को 'बाहर' महसूस होगा। उनकी 'सांस्कृतिक और धार्मिक स्वतंत्रता' बाधित होगी।

› तीसरा कदम: इससे 'असंतोष' फैलेगा, 'विभाजन' होगा और देश में 'एकता' की जगह 'टकराव' बढ़ सकता है। सरकार 'दमनकारी' हो सकती है।

› चौथा कदम: इस स्थिति से बचने के लिए, शान्तिपुरी को 'साझे राजनीतिक आदर्शों' (जैसे, सभी भाषाओं और धर्मों के लिए समानता, संविधान का सम्मान, लोकतंत्र) को अपनी राष्ट्रीय पहचान का आधार बनाना चाहिए।

उत्तर – सरकार के ऐसा करने से देश में 'असंतोष, अलगाववाद और टकराव' बढ़ेगा, क्योंकि यह 'लोकतांत्रिक मूल्यों' और 'विविधता' का सम्मान नहीं करेगा। देश की एकता और अखंडता को खतरा होगा।

उदाहरण 6. राष्ट्रीय आत्म-निर्णय का अधिकार क्या है और यह क्यों महत्वपूर्ण है?

› पहला कदम, हम समझेंगे 'राष्ट्रीय आत्म-निर्णय' का सीधा अर्थ। इसका मतलब है कि 'राष्ट्रीयताओं' को 'स्वतंत्र राज्य' बनाने का या कम से कम 'अपना शासन स्वयं' चलाने और 'अपने भविष्य को तय' करने का अधिकार हो।

› फिर, हम इसकी महत्ता पर बात करेंगे। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि यह किसी भी 'समुदाय' को 'अपनी पहचान' बनाए रखने, 'अपने हितों की रक्षा' करने और 'बाहरी हस्तक्षेप' के बिना 'विकास' करने का मौका देता है। यह 'औपनिवेशिक शासन' के खिलाफ 'मुक्ति आंदोलनों' में एक 'केंद्रीय मांग' रहा है।

› उदाहरण के तौर पर, 'बास्क' लोग अपनी अलग 'भाषा' और 'संस्कृति' के आधार पर स्पेन से 'अलग राज्य' की मांग कर रहे हैं, जो इसी अधिकार का एक स्वरूप है।

› आखिर में, यह 'राज्यों की सीमाओं' और 'अंतर्राष्ट्रीय संबंधों' को भी प्रभावित करता है, क्योंकि जब कोई समूह इस अधिकार का दावा करता है, तो मौजूदा राज्य की 'एकता' पर सवाल उठता है।

उत्तर – राष्ट्रीय आत्म-निर्णय का अधिकार वह सिद्धांत है जिसके अनुसार राष्ट्रों को अपना शासन स्वयं चलाने और अपने भविष्य को तय करने का अधिकार होता है। यह अपनी विशिष्ट पहचान को बनाए रखने, हितों की रक्षा करने तथा बाहरी हस्तक्षेप के बिना विकास करने के लिए महत्वपूर्ण है, और इसका राज्यों के निर्माण व अंतर्राष्ट्रीय राजनीति पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

उदाहरण 7. मान लीजिए एक देश 'X' है जिसमें तीन बड़े सांस्कृतिक समूह A, B और C रहते हैं। समूह A अपनी 'सांस्कृतिक पहचान' के आधार पर 'आत्म-निर्णय' की माँग करता है और कहता है कि हमें 'अपना अलग राज्य' चाहिए। इस माँग से कौन-कौन सी 'चुनौतियाँ' खड़ी हो सकती हैं?

› सबसे पहले, 'एक संस्कृति - एक राज्य' की सोच आती है। अगर समूह A को अलग राज्य मिल जाता है, तो बाकी समूह B और C भी अपनी 'अलग पहचान' के आधार पर 'अलग राज्य' की माँग कर सकते हैं।

› दूसरा, 'जनसंख्या विस्थापन' हो सकता है। अगर समूह A को अलग राज्य मिला, तो जो लोग A समूह के नहीं हैं, लेकिन उस क्षेत्र में रहते हैं, उन्हें 'अपना घर छोड़ना पड़' सकता है। उन्हें डर होगा कि नए राज्य में वे सुरक्षित नहीं होंगे।

› तीसरा, 'सांप्रदायिक हिंसा' की आशंका बढ़ जाती है। 'एक समूह' के लोगों को लगता है कि उन्हें 'दूसरों से खतरा' है, और इस वजह से 'टकराव' और 'लड़ाई' हो सकती है।

› चौथा, नए राज्य में जो लोग अल्पसंख्यक बन जाएँगे, उनकी 'समस्याएँ' बढ़ सकती हैं। उनकी 'भाषा, संस्कृति और अधिकारों' को अनदेखा किया जा सकता है।

› पाँचवां, 'आर्थिक और राजनीतिक स्थिरता' पर असर पड़ता है। छोटे-छोटे राज्यों को चलाना 'आर्थिक रूप से मुश्किल' हो सकता है और उनके बीच 'सीमा विवाद' भी बढ़ सकते हैं।

उत्तर – समूह A के 'आत्म-निर्णय' की माँग से 'एक संस्कृति - एक राज्य' की गलत धारणा, बड़े पैमाने पर 'जनसंख्या विस्थापन', 'सांप्रदायिक हिंसा', 'अल्पसंख्यकों की असुरक्षा', और 'आर्थिक-राजनीतिक अस्थिरता' जैसी कई गंभीर 'चुनौतियाँ' खड़ी हो सकती हैं।

उदाहरण 8. भारतीय संविधान कैसे 'समावेशी राष्ट्रवाद' को बढ़ावा देता है?

› पहला, हमारा संविधान 'धार्मिक, भाषाई और सांस्कृतिक अल्पसंख्यकों' को 'विशेष अधिकार' देता है, ताकि वे अपनी पहचान बनाए रख सकें।

› दूसरा, ये अधिकार सुनिश्चित करते हैं कि अल्पसंख्यक समूहों को 'कानून के सामने समान व्यवहार' मिले और वे सुरक्षित महसूस करें।

› तीसरा, इन प्रावधानों से यह संदेश जाता है कि 'राष्ट्र' किसी एक समूह का नहीं, बल्कि 'सभी समुदायों' का साझा घर है, जहाँ सबकी भागीदारी महत्वपूर्ण है।

उत्तर – इस तरह, संविधान अल्पसंख्यकों की सुरक्षा कर और उन्हें राष्ट्रीय पहचान का हिस्सा मानकर समावेशी राष्ट्रवाद को मजबूत करता है।

उदाहरण 9. टैगोर के अनुसार, सच्चा राष्ट्रवाद क्या है और यह संकीर्ण राष्ट्रवाद से कैसे अलग है?

› पहले यह समझो कि टैगोर राष्ट्रवाद को पूरी तरह खारिज नहीं करते थे। वह भारत की आजादी के समर्थक थे और अपने देश से प्रेम करते थे।

› दूसरा, टैगोर 'संकीर्ण राष्ट्रवाद' के खिलाफ थे। संकीर्ण राष्ट्रवाद वो है जो सिर्फ अपने देश और संस्कृति को सर्वश्रेष्ठ मानता है, और बाकी सबको नीचा दिखाता है या उनसे नफरत करता है।

› तीसरा, उनके अनुसार सच्चा राष्ट्रवाद वह है जो 'मानवता' को सर्वोपरि रखता है। यानी, हम अपने देश से प्यार करें, उसकी तरक्की चाहें, लेकिन कभी भी इंसानियत के मूल्यों (जैसे दया, सम्मान, सहयोग) को न भूलें।

› आखिर में, सच्चा राष्ट्रवाद हमें बाहरी दुनिया से अच्छी चीजें सीखने और अपनाने से नहीं रोकता, बल्कि प्रोत्साहित करता है, जबकि संकीर्ण राष्ट्रवाद हमें अपनी ही सीमाओं में कैद कर देता है।

उत्तर – टैगोर के अनुसार, सच्चा राष्ट्रवाद देशभक्ति और मानवीय मूल्यों का संगम है, जो मानवता को सर्वोच्च मानता है और दूसरों से सीखने को तैयार रहता है। वहीं, संकीर्ण राष्ट्रवाद केवल अपने राष्ट्र को श्रेष्ठ मानता है, दूसरों से घृणा करता है और अपनी सीमाओं में सिमट जाता है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• राष्ट्रवाद के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभावों को उदाहरण सहित स्पष्ट करना बोर्ड परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण है।

• राष्ट्र और परिवार/जनजाति के बीच अंतर बताते हुए 'प्रत्यक्ष संबंध' और 'काल्पनिक समुदाय' जैसे शब्दों का सही प्रयोग करें, यह आपको अच्छे अंक दिलाएगा।

• यह प्रश्न 'राष्ट्र की प्रकृति' या 'राष्ट्र निर्माण के तत्व' के रूप में बोर्ड परीक्षा में आ सकता है। 'काल्पनिक समुदाय' और 'सामूहिक विश्वास' जैसे शब्दों का सही प्रयोग करना महत्वपूर्ण है।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'साझा इतिहास', 'भूक्षेत्र' और 'साझे राजनीतिक आदर्श' – इन तीनों तत्वों को उदाहरणों के साथ अच्छी तरह तैयार कर लें, खासकर भारत के संदर्भ में।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा में अक्सर 'राष्ट्रवाद' पर निबंध या दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों में पूछा जाता है। आपको 'सांस्कृतिक' और 'राजनीतिक' पहचान के बीच का अंतर और उनके महत्व को स्पष्ट रूप से समझाना होगा, खासकर 'लोकतांत्रिक मूल्यों' के संदर्भ में।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें 'आत्म-निर्णय' का अर्थ, इसकी 'महत्वता', और 'दुनिया के विभिन्न हिस्सों से उदाहरण' (जैसे 'बास्क') को अच्छी तरह से समझना ज़रूरी है। खासकर 'एक संस्कृति - एक राज्य' के विचार से इसकी तुलना वाले प्रश्न आते हैं।

• यह विषय 'बोर्ड परीक्षा' के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'आत्म-निर्णय' के 'सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं' को उदाहरणों के साथ समझाने के लिए तैयार रहें। विशेष रूप से 'एक संस्कृति - एक राज्य' के विचार के 'परिणाम' याद रखना।

• इस अवधारणा से 'भारत के संदर्भ में राष्ट्रवाद' पर प्रश्न आ सकते हैं, इसलिए भारतीय संविधान में 'अल्पसंख्यक अधिकारों के प्रावधानों' को अच्छे से याद रखना।

• टैगोर के विचारों पर आधारित प्रश्न अक्सर 'संकीर्ण राष्ट्रवाद' और 'मानवतावाद' के बीच अंतर पर पूछे जाते हैं। उनकी 'देशभक्ति को मानवता पर विजय नहीं होने दूँगा' वाली पंक्ति को याद रखना।

एक नज़र में रिवीज़न

› राष्ट्रवाद लोगों को जोड़ता व विभाजित करता है; ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण।

› राष्ट्र एक 'काल्पनिक समुदाय' है, प्रत्यक्ष संबंधों पर आधारित नहीं।

› राष्ट्र: काल्पनिक समुदाय, सामूहिक विश्वास, आकांक्षाओं पर आधारित।

› साझा इतिहास, भूक्षेत्र, साझे राजनीतिक आदर्श राष्ट्र निर्माण के आधारभूत तत्व हैं।

› सांस्कृतिक पहचान की सीमाएं; राजनीतिक पहचान (साझे आदर्श) राष्ट्र का आधार है।
› राष्ट्रीय आत्म-निर्णय: राष्ट्रों का अपना शासन व भविष्य तय करने का अधिकार।
› आत्म-निर्णय के दावों से विस्थापन, हिंसा, अल्पसंख्यक समस्याएँ हो सकती हैं।
› बहुलवाद यानी विभिन्न संस्कृतियों का सह-अस्तित्व; समावेशी पहचान सबकी पहचान स्वीकारना।
› टैगोर ने संकीर्ण राष्ट्रवाद की आलोचना की; मानवता को देशभक्ति से ऊपर रखा।